हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17-HL-**HL10**

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

नाम (Name): चेतन कुमार मीणा

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल न. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]: 0 2 5 4 8 0 8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Chetan

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 136

टिप्पणी (Remarks): उत्तर काफी अच्छे हैं। कुछ व्याख्याओं पर थोड़ा और ध्यान देने की आवश्यकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

दृष्टि The Vision

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) विरहा बुरहा जिनि कहौ, बिरहा है सुलितान।
जिस घटि विरह न संचरै, सो घट सदा मसान।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग

प्रस्तुत काव्यांश बाबू श्याम सुंदर द्वारा संकलित कबीर की कविताओं के संग्रह कबीर ग्रंथावली से उद्धृत है। ये 'विरह को अंग' नामक खंड से है।

इन पंक्तियों में कबीर ईश्वर विषयक विरह की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं।

व्याख्या

कबीर कहते हैं कि विरह व्यथा में अत्यंत महत्वपूर्ण है। जो लोग विरह को बुरा बताते हैं, उन्हें विरह की सही पहचान नहीं है, विरह सुलतान के समान अत्यंत आदर का पात्र है। जिस व्यक्ति को अपने ईश्वर के प्रति बिछुड़न की विरह की अनुभूति नहीं होती, उस व्यक्ति का कल्याण व उद्धार

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

नहीं हो सकता।

विशेष

संवेदना

→ भावनात्मक रहस्यवाद के ईश्वर से मिलन की तड़प से उत्पन्न विरह का वर्णन, यह परंपरा कबीर ने सूफियों से सीखी।

→ कबीर के अनुसार संसार के सांसारिक भोग के आनंद के बजाय ईश्वर की प्राप्ति हेतु उठाया गया दुःख कहीं अधिक श्रेष्ठ है।

शिल्प →

→ सुलितान, मसान जैसे अरबी-फारसी शब्दों के कारण भाषा सधुक्कड़ी व पंचमेल बन गयी है।

→ शब्दों का सटीक प्रयोग, भाषा अर्थ के अनुसार नाचती सी नजर आती है।

→ अंतिम पंक्तियों में "विरह न संचरै" का वर्णन कर योग शास्त्र का समन्वय किया।

प्रासंगिकता ⇒ व्यक्ति को अतिशय भोग से बचते हुए ईश्वर या उच्च कार्य करने के लिए उठाया गया दुख या विरह काम्य व प्रासंगिक है।

6/10

Good

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) तंत्रीनाद, कवित्त-रस, सरस राग, रति-रंग।
अनबूड़े बूड़े, तिरे जे बूड़े सब अंग।।

संदर्भ / प्रसंग ⇒
उपरोक्त पंक्तियाँ शिल्प के जादूगर रीतिकालीन कवि बिहारीलाल की 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है।
बिहारीलाल यहाँ कला, कविता व श्रृंगार का वास्तविक उद्देश्य स्पष्ट कर रहे हैं, जो वह मानते हैं।

व्याख्या →
बिहारीलाल कहते हैं ~~कि सभी स्वर~~-राग अर्थात संगीत ~~व, सभी~~ कविताओं, व श्रृंगार आदि का उद्देश्य मनुष्य को चरम आनंदोपलब्धि कराना है। जो व्यक्ति इनका प्रयोग अपने सुख और आनंद की पूर्ति में नहीं करता वे आनंद से वंचित रह जाते हैं। और जो इनका इस प्रकार आनंद लेते हैं उनको ~~इस~~ अंततः सब चीजों से छुटकारा मिल जाता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस स्थान में प्रश्न के अतिरिक्त कुछ
(Please do not write anything except the question number in this space)

संवेदना
→ कलाओं को साधन माना है, साध्य मनुष्य को रसोपलब्धि व आनंदोपलब्धि कराना है।
→ यह काव्य की रसवादी व्याख्या है। दरबारी माहौल में स्त्री की इच्छा सरसता अनुभव करने की होती है।

शिल्प
→ भाषा की समाहार क्षमता व प्रवाह का अद्भुत दिग्दर्शन है, ऐसा ही वर्णन वे अन्य जगह करते हैं –
"कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत है, नैनु ही सों बात।"
→ कविता व कलाओं के उद्देश्य को भी बिम्बात्मक बना दिया है।
→ लयात्मकता व बनैत्री अद्भुत है।
→ सटीक शब्द प्रयोगवाली ब्रज है।
प्रासंगिकता ⇒ कलाओं की व महिलाओं की यह भोगवादी व्याख्या प्रासंगिक नहीं है, क्योंकि आज कलाओं का उद्देश्य समाजहित भी पुकारना चाहिए।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~अप~~ संदर्भ/प्रसंग →
उपरोक्त काव्य पंक्तियाँ अवधी के आख्यान 'जायसी' की सर्वश्रेष्ठ कृति 'पद्मावत' के 'नागमती का विरह' नामक सर्ग से अवतरित हैं।

रत्नसेन के सिंहलद्वीप चले जाने पर नागमती विरह में जल रही है, मौसमी दशाएँ उसकी पीड़ा को तेज कर रही हैं—

व्याख्या →
नागमती स्पष्ट करती है कि अब भादों का माह आ गया है, दिनभर तेज धूप व आँधियाँ चलती हैं, इनमें कैसे रात में अकेला हो सकता है। पति के विरह में उसकी स्थिति दयनीय हो रही है, भादों के महीने में में नाग अपनी सेज सजाएगा किंतु वह किसके साथ अपनी सेज सजाएगी, अतः वो अकेली ही रह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। इस प्रकार अकेले रहने से मेरा हृदय फटा जा रहा है। मेघ घोर जोर से वर्षा कर रहे हैं, पर मेरे अतृप्त हृदय पर वर्षा नहीं होगी। मोर की आवाज भी मुझे चुभने लगी है। मेरे लिए तो पूरी पृथ्वी जल गयी है और जलकर खाक हो गयी है। अर्थात नागमती के लिए इनका कोई महत्व नहीं।

विशेष ⇒

→ नागमती के इस विरह को शुक्लजी ने 'आशुकमूर्छकों' का निर्लज्ज प्रलाप नहीं हिन्दू गृहिणी की तात्विक विरहवाणी बताया है।

→ नारीवादी व मार्क्सवादी आलोचकों ने इनको मध्यकालीन स्त्री की दासता का वर्णन कहा है।

→ बारहमासा वर्णन जैसी कथानक रूढ़ियों का वर्णन

→ ठेठ अवधी की मिठास व प्रवाह आई हुई है।

⇒ हिन्दू गृहस्थ की कथा को बड़े ही तात्विक तरीके से उकेरा है, समन्वय की यह चेतना काम्य है।

प्रासंगिकता ⇒ किसी पति का पत्नी को छोड़कर जाना और पत्नी का फिर भी उसके बारे में सोचना अधिक प्रासंगिक नहीं है, किन्तु गार्हस्थिकता प्रासंगिक है।

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) बिन गोपाल बैरिन भई कुजैं।
तब ये लता लगति अति सीतल, अब भईं विषम ज्वाल की पुंजैं।।
बृथा बहति जमुना, खग बोलत, बृथा कमल फूलैं, अलि गुंजैं।
पवन पानि घनसार सँजीवनि, दधिसुत किरन भानु भइं भुंजैं।।
ए, ऊधो, कहियो माधव सों, बिरह कदन करि मारत लुंजैं।
सूरदास प्रभु को मग जोवत, अँखियाँ भईं बरन ज्यों गुंजैं।।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रसंग / संदर्भ उपरोक्त काव्य उक्तियाँ सूरदास की सागर के लिए पदों के शुक्ल जी द्वारा संगृहीत 'भ्रमरगीतसार' से ली गयी हैं।

उद्धव गोकुल आएँ हैं ताकि गोपियों को निर्गुण ज्ञान मार्ग सिखा सकें। गोपियाँ विरहदग्ध हैं क्योंकि कृष्ण ने आने का वचन देकर वादाखिलाफी की। गोपियाँ इसी दशा का वर्णन करती हैं –

व्याख्या ⇒
गोपियाँ कहती हैं कि कृष्ण के मथुरागमन के कारण अब सब सूना है. कृष्ण के रहते लता भी कुंदर लगती है, किन्तु अब यह भी आग की ज्वाला के समान हमें लगती प्रतीत होती है। जमुना नदी, यहाँ के चीखते पक्षी, कमल का फूल आदि सब अतिरिक्त लगते हैं। वे उद्धव से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कहती हैं कि तुम मधुराजाकर आओ विरह स्थिति से कृष्ण को अवगत कराना उन्हें यह भी बताना की विरह की आग में जलकर उनकी आँखें झुलस गयी हैं।

विशेष
→ गोपियों के लिए शुष्क नीरस ज्ञान व निर्गुण मार्ग के बजाय यह विरह काम्य है।
→ विरह का उपरोक्त वर्णन अद्भुत है, ऐसा ही वर्णन जायसी नागमती के लिए करते हैं।
→ प्रकृति के साथ रागात्मक संबंध
→ ब्रज भाषा का सुंदर प्रयोग, विश्वास करना मुश्किल है कि पहले प्रयोग में ही ब्रज भाषा चरम को छू रही है।
→ लीलापद छंद का प्रयोग (कृष्ण स्वयं लीलापद गावें → सूरदास)
→ पूरा वर्णन चलचित्र के समान बिम्बात्मक है। प्रकृति का अद्भुत प्रतीकात्मक प्रयोग
→ संगीतात्मकता व नादात्मकता बेजोड़

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मेरे जाति-पाँति, न चहौं काहू की जाति-पाँति,
मेरे कोऊ काम को, न हौं काहूँ के काम को।
लोक परलोक रघुनाथ ही के हाथ सब,
भारी है भरोसो 'तुलसी' के एक नाम को।
अति ही अयाने उपखानो नहिं बूझें लोग,
'साह ही को गोत गोत होत हैं गुलाम को'
साधु कै असाधु कै भलो कै पोच, सोज कहा,
का काहू के द्वार परौं? जो हौं सो हौं राम को।।

संदर्भ/प्रसंग : प्रस्तुत काव्यपंक्तियाँ समन्वय के सर्वश्रेष्ठ कवि तुलसी की 'कवितावली' नामक रचना से ली गयी हैं।

तुलसी यहाँ भगवान राम के प्रति दास्य भक्ति का वर्णन करते हैं।

व्याख्या ⇒ तुलसी कहते हैं कि उन्होंने तत्कालीन जाति व्यवस्था पर चोट अवश्य की है, उन्हें पुर जाति पाति जैसी बंटवारे वाली भक्तिओं से मतलब नहीं, उन्होंने न तो किसी का कोई काम लेना है और वह खुद किसी के काम के हैं। वे तो भगवान श्रीराम के आश्रय से हैं, क्योंकि वे ही सभी की नैया पार लगाते हैं। वे कहते हैं कि उन्हें राम पर पूरा भरोसा है और लोगों

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भी महत्व देना चाहिए। कभी लोग भगवान श्रीराम के ही गुलाम हैं। साधु हो या असाधु हो सभी कुछ भगवान राम के आश्रित हैं।

विशेष ⇒

→ राम के प्रति तुलसी की दास्य भक्ति।

⇒ तुलसी बताते हैं सब कुछ राम की प्रकृति से होता है, सूर भी एक जगह कहते हैं—
"जो अपनो पुरुषारथ मान अति झूठो है सोई"

⇒ यही भाव तुलसी अन्यत्र व्यक्त करते हैं—
"समरथ बड़ो है, कौन मोटो कौन छोटो"

⇒ व जाति-पाँति में बाँटने के बजाय तुलसी राम के सहारे सभी को एक होने की प्रेरणा देते हैं।

⇒ 'ब्रज भाषा' पर तुलसी की अद्भुत पकड़।

⇒ अनुप्रास के तो वे बादशाह हैं — आचार्य द्विवेदी

⇒ ~~उत्कृष्ट~~ संगीतात्मकता अद्भुत है।

⇒ कवित्त छंद का सुंदर प्रयोग

6/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) कबीर के काव्य में निहित रहस्यवाद के प्रेममूलक, साधनामूलक एवं अभिव्यक्तिमूलक रूप पर प्रकाश डालिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कबीर का काव्य अद्भुत संभावनाओं से भरा है। शुक्ल जी ने यद्यपि उनकी रहस्यवादी प्रवृत्ति को नीरस व शुष्क बताया, किन्तु वास्तव में उनके काव्य में कई प्रसंग मिलते हैं जहाँ वे जायसी के समकक्ष खड़े नज़र आते हैं।

कबीर की परवरिश नाथ पंथियों के यहाँ हुई, अतः स्वाभाविक था कि उनके पास नाथपंथियों से प्रेरित साधनात्मक रहस्यवाद का प्रयोग हो। कबीर का ~~उपरोक्त~~ निम्न उदाहरण अद्भुत है जहाँ

'जल में कुंभ कुंभ में जल है
बाहर भीतर पानी।'

किन्तु, कबीर किसी एक ~~व्यक्ति~~ पक्ष से नहीं जुड़ते हैं जहाँ वे पूरी तरह संतुष्ट हों। वे नाथपंथियों के योगमार्ग पर चलकर सहस्रार चक्र की अवस्था में पहुँचते हैं, किन्तु वे

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

पुनः सामान्य अवस्था में लौट आते हैं। कबीर तुरंत मोहलंग महमूद कर बोलना करते हैं -

" पकरि कबीर टेक भगति की,
झक मारि करै।"

कबीर इसी बीच सूफियों के भावनात्मक रहस्यवाद से परिचित होते हैं। इस भावनात्मक रहस्यवाद के दोनों पक्ष उनके काव्य में दिखते हैं, उनमें विरह की तड़प भी है तो मिलन का आनंद भी है।

कबीर अपने ईश्वर से विरह की तड़प को इस प्रकार व्यक्त करते हैं -

" तलफै बिनु मोर पिया
दिन नहीं चैन रात नहीं निंदिया,
तड़प तड़प के भोर किया।"

कबीर केवल विरह में आकुल व्याकुल रहने वाले नहीं, ईश्वर की अनुभूति होते ही वे कह उठते हैं - "हमारा यार है हममें हमन को इंतजारी क्या।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कबीर का रहस्यवाद का प्रेममूलक पक्ष भी महत्वपूर्ण है। वे ईश्वर से उत्कट प्रेम करते हैं। वे स्पष्ट करते हैं कि-"

"मैं हरि की बहुरिया, हरि मेरो पीउ"।

कबीर का प्रेम इतना आसान नहीं है। जायसी कहते थे कि "प्रेम पहाड़ कठिन विधि गढ़ा, सो पै चढ़ा शीश सौं चढ़ा।" इसी प्रकार कबीर भी कहते हैं कि "राजा प्रजा जेहि रुचै शीश देहि ले जाय।" एक अन्य प्रसंग में भी यही भाव प्रकट करते हैं -

"कबिरा यह घर प्रेम का, खाला का घर नाहीं।"

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि कबीर का प्रेम किसी सगुण ईश्वर के प्रति नहीं, अपितु अनुभूति निर्गुण राम के लिए है।

जिस प्रकार कबीर ईश्वर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

की साधना पद्धति में लगातार शोध करते हैं, इसी प्रकार साधनात्मक, प्रेममूलक व अभिव्यक्तिमूलक रहस्यवाद में संधान करते हैं।

10/20

अभिव्यक्तिमूलक रहस्यवाद का स्पष्ट करें।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) सूरदास की साहित्यिक निपुणता पर विचार कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

सूरदास ~~कृष्ण~~ भक्तिकाल की कृष्णकाव्य धारा के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। उनके समय में कृष्णदास, गोविन्ददास, परमानंददास आदि कवि भी थे, किन्तु सूरदास सब पर भारी पड़ते हैं।

→ सूरदास की साहित्यिक निपुणता सर्वाधिक वात्सल्य, श्रृंगार वर्णन में दिखती है। उन्होंने ब्रज भाषा को वात्सल्य व श्रृंगार की विशेषज्ञ भाषा बना दिया। वात्सल्य से संबंधित निम्न उदाहरण अद्भुत बन पड़ा है—

"सोभित कर नवनीत लिए।
घुटरुनि चलति रेनु तन मंडित मुख दधि लेप किए।"

⇒ सूरदास मातृहृदय का अद्भुत वर्णन ~~की~~ से करते ही हैं, उनकी "छबीले मुरली नेक बजाऊँ" वाले प्रसंगों पर हजारी प्रसाद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

झूम उठते हैं। उनका प्रेम व श्रृंगार वर्णन भी बेजोड़ है —

" खेलन को निकसे ब्रज मोहन
औचक ही देखि तहँ राधा, परि भाल गोरी।"

→ सूरदास की साहित्यिक निपुणता अलंकारों के प्रयोग में दिखती है। यद्यपि कहीं कहीं उन्होंने इसकी अधिकता की है, किन्तु उनके रूपक व उपमा बेजोड़ बन पड़े हैं।

⇒ सूर की साहित्यिक निपुणता भ्रमरगीतसार संबंधी पदों में दिखती है। उनके सगुण निर्गुण विवाद ने इन्हें सर्वश्रेष्ठ उपालंभ बना दिया है। उपालंभ का एक उदाहरण है —

"मधुबन तुम कत रहत हरे।
तुम हो निलज लाज नहीं तुमको, ऊधो मोहे मोहि।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया, इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~प्रामाणी~~ सूरदास की साहित्यिक निपुणता ब्रज भाषा में भी दिखती है। शुक्ल जी के अनुसार सूर ने "चलती हुई सी भाषा को काव्य भाषा" बना दिया और पहले प्रयोग में ही भाषा को परम उपलब्धि के स्तर पर पहुँचाया।

इस प्रकार सूरदास ने काव्य विस्तार हेतु विषय कम उठाए हैं, किन्तु जितने उठाये हैं उनमें किसी दूसरे के लिए जगह नहीं छोड़ी। वात्सल्य व 'गोचारण परंपरा' के वर्णन में सूर के आगे पश्चिम के लोंगफैलो, वर्ड्सवर्थ, तथा संस्कृत के महाकवि भास, कालिदास व भवभूति भी कहीं नहीं ठहरते, केवल तुलसी थोड़े निकट दिखते हैं, किन्तु बराबरी वे भी नहीं कर पाते।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) आपके मत से कबीर और तुलसी में किसे 'लोकनायक' की संज्ञा देना अधिक उचित होगा? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था कि "भारत का लोकनायक वही हो सकता है जो समन्वय की विराट चेतना लेकर आया हो।" यदि इस कथन को आधार बनाएँ तो किसी एक कवि को लोकनायक बताना आसान नहीं लगता। यह फैसला दोनों का विश्लेषण करके ही कर सकते हैं।

कबीर 'निर्गुण राम' के भक्त हैं वहीं तुलसी 'सगुण राम' के। दोनों ही अपने अपने तरीके से लोकचेतना को जगा रहे थे। कबीर कहते थे कि "निर्गुण राम जपहु रे भाई" तो तुलसी कहते थे कि उनके राम "कोसलपति भगवान" हैं। किन्तु दोनों के राम लोगों के दुखों का हरण करने वाले हैं। एक बिंदु पर

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दोनों कवि निर्गुण व सगुण का समन्वय कर लोगों को सांसारिक कर्मों से विरत रहने की प्रेरणा देते हैं ⇒

संतो धोखा कासु कहिए।
गुन में निरगुन, निर्गुन में गुन बाट छांडि क्यों बहिए। - कबीर

"अगुनहिं सगुनहिं नहीं कछु भेदा"

कबीर व तुलसी का काव्य सांप्रदायिकता के विरुद्ध खड़ा नजर आता है। कबीर व तुलसी यहाँ समान नहीं प्रतीत होते हैं। कबीर धार्मिक समन्वय का मार्ग अपनाते हैं तो तुलसी हिन्दू धर्म की आंतरिक असंगति की राह पकड़ते हैं।

"हिन्दू कहत है राम हमारा मुसलमान रहमाना
आपस में दोउ लड़त हैं, मर्म नहीं जाना।"
- कबीर

"शिवद्रोही मम दास कहावा
सो नर मोहि सपनेहु नहीं भावा"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किन्तु, वर्णव्यवस्था के संदर्भ में दोनों की लोकचेतना में थोड़ा शुरुआती अंतर प्रतीत होता है। कबीर निम्न वर्ण (कथित) से होने के कारण शुरू से ही सब कुछ को झाड़ फेंककर चलते हैं और वर्णव्यवस्था पर कठोर टिप्पणी करते हैं। तो तुलसी शुरुआती समर्थन के बाद अपनी लोकचेतना से ऐसा करते हैं –

"जो तू बांभन बंभनी का जाया
आन बाट है क्यों नहीं आया।" – कबीर

"विप्र निरच्छर लोलुप कामी।" – तुलसी

दोनों ही कवि की लोकचेतना स्थानीय लोकभाषा का महत्व समझती है। कबीर जहाँ संस्कृत को 'कूप जल' कहते हैं और तुलसी का मन भी भाषा को 'बहता नीर' तो तुलसी का मन भी 'प्रबोध जोहि होई' होता है।

इसके बाद भी तुलसी अपना और ध्यान समाज के सुधार में लगाते हैं।

दोनों समान लोकचेतना के हैं, किसी एक को श्रेष्ठ कहना तार्किक नहीं।

9/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

3. (क) 'असाध्य वीणा' पर अस्तित्ववाद तथा जेन बौद्धमत का प्रभाव कहाँ तक दिखाई देता है? विवेचन कीजिये। 20

'असाध्यवीणा' अज्ञेय की सर्वश्रेष्ठ रचना है, जिसमें उन्होंने अपनी जीवन दृष्टि व रचना दृष्टि का वर्णन किया है। इस रचना पर इलियट के सिद्धांतों का प्रभाव तो शिल्प के स्तर पर भी दिखता है, किन्तु संवेदना के स्तर पर इसके सूत्र अस्तित्ववाद व जेन बौद्धमत से भी जुड़ते हैं।

अस्तित्ववाद का प्रभाव

'असाध्यवीणा' में अस्तित्ववाद का प्रभाव सीधे सीधे नहीं दिखता, किन्तु गहराई में जाकर देखें तो सूत्र स्पष्ट होते हैं तथा आते। अस्तित्ववादी आधुनिक विचारधारा है, जिसके प्रणेता सार्त्र, हाइडेगर, कामू। सामान्यतः अज्ञेय सार्त्र का पालन करते हैं, किन्तु सार्त्र व हाइडेगर ने अस्तित्वाद का स्वरूप

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

नास्तिक रूप में प्रकट किया है। अतः कथ्य
अनात्मवीणा के तार कीर्केगार्द से ज्यादा
जुड़ते हैं। कीर्कगार्द ने माना था कि
व्यक्ति निरर्थकता बोध से घबराकर अंततः
ईश्वर की तलाश करता है। अनात्मवीणा
में भी प्रियंवद अपना संपूर्ण अस्तित्व
परंपरा अर्थात ईश्वर में ढूंढता है और
कीर्कगार्द से आगे अहंशून्यता की स्थिति
में चला जाता है -

" मैं तो डूब गया था
स्वयं शून्य में. ~~अपने~~ ओ वीणा
को रही अपने को शोध रहा था"

जेन बौद्धमत का प्रभाव

जेन बौद्धमत जापान में प्रचलित महायान धारा का एक मत है। जेन बौद्ध मत में दो सिद्धांत प्रमुख हैं-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

योगाचार विज्ञानवाद व माध्यमिक शून्यवाद। माध्यमिक शून्यवाद का मानना है कि जगत में सब कुछ शून्य है, जो हमें प्रतीत होता है, वह भी उसी शून्य से प्रकट होता है। अज्ञेय लिखते हैं –

"महाशून्य
वह महामौन
जो शब्दहीन सबमें
गाता है।"

योगाचार विज्ञानवाद का प्रभाव भी अज्ञेय पर है। इसके व्याख्याकार चिंतक नागार्जुन आदि ने स्पष्ट किया कि प्रत्येक चीज का अस्तित्व सिर्फ चेतना स्तर पर ही है। मिलिन्द को भी नागार्जुन यही समझाते हैं। यही बात असाध्यवीणा में स्पष्ट होती है। प्रियंवद 'सब कुछ को

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

तथता' से लेकर रिरिट वृत्ता के सभी अनुभवों
चेतना के स्तर पर महसूस कर पाता है।

इस प्रकार देखें तो, अस्तित्ववाद
के सीमित तार असाधारणता से जुड़ते हैं
तो वहीं ज़ेन बौद्धमत का स्पष्ट प्रभाव
काफ्का में दिखता है। ज़ेन बौद्धमत का
प्रभाव उन्होंने स्वयं स्वीकारा है।

Good 12/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) 'राम की शक्तिपूजा' में विभिन्न स्तरों पर समायोजित द्वंद्वात्मकता की पहचान कीजिये। 15

'राम की शक्तिपूजा' अत्यंत संभावना भरी कविता है। इसकी चरम नाटकीयता ने द्वंद्वों की सघनता पैदा की है, जो कई परतों में स्पष्ट होती है।

द्वंद्वात्मकता को निम्न स्तर पर महसूस किया जा सकता है -

→ अंधकार तथा प्रकाश का द्वंद्व

पूरी कविता अंधकार तथा प्रकाश के द्वंद्व से भरी है। प्रतीकात्मक रूप से इसका ~~अर्थ~~ अंधकार के रावण के पक्ष व प्रकाश को राम के पक्ष की विजय से जोड़ा जा सकता है -

" है अमा निशा; उगलता गगन घन अंधकार; खो रहा दिशा का ज्ञान..."

" ऐसे अंधकार वन में चमकी,
जैसे उभारिका छवि अच्युत।"

→ सत्य व असत्य (सत् व असत्) का संघर्ष

राम का पक्ष कविता में सत्य का

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)
कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पक्ष है, वहीं रावण का पक्ष अन्याय का। क्योंकि राम अपनी पत्नी के लिए संघर्ष कर रहे हैं, वहीं रावण अपनी स्वधर्मिता के कारण। धर्म व अधर्म का संघर्ष भी क्रमशः राम व रावण से जुड़ा है।

"रावण अधर्मरत भी कर सका गलत तो तुम हो गलत निश्चय करोगे उसे घात।।

=> शक्ति व अ-शक्ति का द्वंद्व

रावण ने कठोर साधना से शक्ति(देवी) को अपने पक्ष में कर लिया है, वहीं राम शक्तिहीन है। राम स्वयं शक्ति की कमी का क्षोभ प्रकट करते हैं-

"अन्याय है जिधर, है उधर शक्ति"।

=> आशा व निराशा का द्वंद्व

राम लगातार आशा व निराशा के द्वंद्व से युक्त हैं। जब उन्हें युद्ध में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

सीता की मूर्ति दिखती है तो वे निराशा में आ जाते हैं और सीता का मुख याद आते ही पुन: ऊर्जा व आशा से भर उठते हैं -

" है अमानिशा उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार
x x x x x
केवल जलती मशाल।"

वस्तुत: शक्तिपूजा की बहु प्रतीक व्यंजना के कारण इसका प्रतीकात्मक अर्थ सीता की मुक्ति, नारी की मुक्ति, भारत की आजादी, लोकनाम गाँधी की शक्तिहीनता, निराला का आत्मसंघर्ष आदि से जुड़ता है।

9/15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पद्मावत अन्योक्ति है या समासोक्ति? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जब कोई रचना अपने प्रस्तुत के साथ अप्रस्तुत अर्थ भी प्रतीकात्मक रूप से धारण करती है तो उसके बारे में समासोक्ति व अन्योक्ति संबंधी प्रश्न उठ खड़ा होता है। अन्योक्ति का तात्पर्य है कि कथा में अप्रस्तुत अर्थ प्रस्तुत अर्थ से ज्यादा महत्वपूर्ण है। वहीं, समासोक्ति का तात्पर्य है कि ~~अन्योक्ति~~ अप्रस्तुत भी महत्वपूर्ण है किन्तु प्रस्तुत अर्थ की भी अपनी विशेष अस्तित्व है।

'पद्मावत' के संदर्भ में यह समस्या इसलिए उत्पन्न होती है, क्योंकि जायसी ने हिन्दु घर से उठायी आख्यानपरक कहानी में सूफी दर्शन का समाविष्ट कर दिया। इसलिए कुछ आलोचकों का मत है कि पद्मावत अन्योक्ति है, क्योंकि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

मंझन की मधुमालती आदि की तरह यह भी अनअलहक के तहत बका से फना की यात्रा तक की कहानी है।

किन्तु दूसरे ओर माताप्रसाद गुप्त व अन्य विद्वानों का मत है कि पद्मावत में दी गई कथा ही महत्वपूर्ण है, सूफी तत्व तो उसमें महज 'छौंक' के समान है। उनका तर्क है कि रचना के अंत में न तो सूफीकाव्य की तरह विरही का ईश्वर से मिलन हो पाता है, बल्कि यहाँ तो नायक खलनायक सभी राख बन जाने को बाध्य हैं। यहाँ न तो रत्नसेन जिंदा रहता है और न ही नागमती या पद्मावती। वस्तुतः इसकी ओर संकेत खुद जायसी ने किया है कि

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अगर केवल प्रेम रहा है और प्रेम की अभिव्यक्ति ही वे करना चाहते थे, वे स्पष्ट करते हैं - "फूल मरै पर मरै न बासू"।

इस आधार पर देखें तो सूफी तत्व भी, पद्मावती के अलौकिक स्वरूप के कारण प्रतीत होता है, किंतु उसकी मात्रा अत्यल्प है। अतः पद्मावत को समासोक्ति कहना ही तार्किक होगा।

6/15

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) भ्रमरगीतसार में सूर के विरह वर्णन के संबंध में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की मान्यताओं का उल्लेख करते हुए उससे अपनी तार्किक सहमति या असहमति प्रकट कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भ्रमरगीतसार के जरिये आचार्य शुक्ल जी ने विरह वर्णन की मान्यताएँ प्रकट की हैं। उन्होंने विरह को

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजियेः $10 \times 5 = 50$

(क) कौन कहता है, जीवन-संग्राम में वह हारा है। यह उल्लास, यह गर्व, यह पुलक क्या हार के लक्षण हैं? इन्हीं हारों में उसकी विजय है। उसके टूटे-फूटे अस्त्र उसकी विजय-पताकाएं हैं। उसकी छाती फूल उठी है, मुख पर तेज आ गया है।

व्याख्या ⇒ प्रस्तुत गद्यांश में लेखक स्पष्ट करता है कि जिसको तुम हारा हुआ मानते रहे हो, वह वास्तव हारा नहीं है। तुम उसकी जीत को नहीं समझ पा रहे हो। वह हारकर भी जीत गया है। उसके वस्त्र या विजय पताकाएँ भले ही टूट गयी हों, किन्तु जिस लक्ष्य का उद्देश्य उसने स्थापित किया वह उसने पा लिया है। वह इसमें गर्व महसूस कर रहा है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒
→ लेखक ने स्पष्ट किया है कि हार या जीत केवल इस बातपर निर्भर करती है कि वांछित लक्ष्य की पूर्ति हुई अथवा नहीं।
⇒ जीत सदैव जीतने में नहीं होती, अपितु अपनों के लिए हारकर भी जीता सकता है।

→ भाषा सधी हुई है।
→ वर्णनात्मक शैली का प्रयोग किया है।
→ 'छाती फूलना' जैसे लोक मुहावरे का प्रयोग, पंक्तियों की उम्र बढ़ाता है।

2/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) विद्यापति की चर्चा होते ही कविवर 'दिनकर' का एक प्रश्न बरबस सामने आकर खड़ा हो जाता था– "विद्यापति कवि के गान कहाँ?" बहुत दिनों बाद मन में उलझे हुए उस प्रश्न का जवाब दिया– ज़िंदगी-भर बेगारी खटनेवाले, अपढ़ गँवार और अर्धनग्नों में, कवि! तुम्हारे विद्यापति के गान हमारी टूटी झोंपड़ियों में ज़िंदगी के मधुरस बरसा रहे हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष ⇒

→ दिनकर द्वारा विद्यापति की समीक्षा पर निबंधकार ने अपनी राय व्यक्त की

→ ललित निबंध

→ भाषा सरल व सहज

→ विद्यापति की काव्य की निबंधकार ने समीक्षा की।

1/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) युद्ध क्या गान नहीं है? रूद्र का शृंगीनाद, भैरवी का ताडव-नृत्य और शस्त्रों का वाद्य मिलकर भैरव संगीत की सृष्टि होती है। ध्वंसमयी महामाया-प्रकृति का वह निरंतर संगीत है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कंदगुप्त से लिया गया है। उपरोक्त प्रसंग में जयमाला विजया को संगीत का महत्व समझा रही है।

व्याख्या ⇒
जयमाला द्वारा विजया के संगीत की महत्ता पर प्रश्न उठाने पर, कहा जाता है कि युद्ध भी तो एक प्रकार का गान ही है। रुद्र का शृंगनाद और शिव का तांडव नृत्य और शस्त्रों के वाद्य यंत्रों से जिस प्रकार भैरव संगीत की रचना होती है, उसी महासंगीत से युद्ध आदि की उत्पत्ति होती है। सम्पूर्ण प्रकृति उसी महामाया परमेश्वर की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निरंतर संगीतात्मकता का प्रकट रूप है अर्थात संगीत का वास सभी जगह है।

विशेष ⇒ संवेदना

→ संगीत के जरिये ईश्वर की सर्वत्र व्याप्ति की ओर इशारा किया है। यह नव्य वेदांत के प्रभाव को दर्शाता है, जिसकी गांधी, टैगोर विवेकानंद आदि व्याख्या कर रहे थे।

→ युद्ध का वर्णन यहाँ सामान्य संगीत के समान बताया है, जो दर्शाता है कि राजपूत काल में युद्ध आम बात थी।

शिल्प ⇒

→ भाषा बोधगम्य किन्तु तत्सम बहुला है।

→ स्पर्श बिम्ब की अनुभूति

→ दार्शनिक पक्ष की अभिव्यक्ति

अहिंसावादी एवं क्रांतिकारी आंदोलन की भी बात करें

मॉडल उत्तर देखें

5/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्व है। कभी एक क्षण के लिए भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिए व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

प्रस्तुत गद्यांश मोहनराकेश कृत नाटक "आषाढ का एक दिन" से लिया गया है। उपरोक्त प्रसंग में राजनीति की कमाइयों का वर्णन किया गया है -

व्याख्या ⇒ राजनीति की व साहित्य की तुलना करते हुए स्पष्ट किया है कि राजनीति में प्रतिपल अत्यधिक तत्पर रहना पड़ता है, क्योंकि राजनीति में उलटफेर क्षण भर में हो जाते हैं। जो राजनेता राजनीतिक जीवन में जागरूक नहीं होते वे सफल नहीं हो पाते। सफल राजनेता के लिए प्रतिपल जागरूक होना जरूरी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष :-
संवेदना → राजनीति के प्रतिपक्ष नेता की जागरूकता जरूरी प्रतीत होती है।
→ प्रत्येक क्षण का महत्व स्पष्ट किया है। अतः क्षण विशेष का महत्वहीन समझना उचित नहीं।
⇒ साहित्य में क्षण का महत्व नहीं होता, ऐसा लेखक की अभिव्यक्ति है। किन्तु अज्ञेय जैसे 'नई कविता' के कवियों ने क्षण के महत्व दिखाए।
" केवल वह क्षण अपना
तुम्हारी पलकों का कंपना।"
शिल्प → भाषा अत्यधिक समर्थ व प्रवाहमान
प्रासंगिकता → राजनेता की जागरूकता संबंधी अल्पता का वर्णन किया है। राजनेताओं को सत्ता में आना, पाँच वर्ष भूल जाने की प्रवृत्ति आज आम है। अच्छे नेता के लिए सचेत होने की बात प्रासंगिक है।

5/10 बेहतर बनाएँ

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

खोई

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ/प्रसंग निर्दिष्ट गद्यांश राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित कहानी संग्रह "एक दुनिया समानांतर" की कमलेश्वर कृत 'खोई हुई दिशाएँ' से ली गयी है।

चंदर अपने ग्रामीण परिवेश से कटकर शहर में अकेलापन व संत्रास झेल रहा है। वह शहर में महिलाओं का वर्णन करता है —

व्याख्या →

चंदर सोचता है कि बच्चे और उनकी माँ के रूप में समान प्रतीत हो रही है, किन्तु माताओं का ध्यान केवल अपने शौक पूरा करने पर है, बच्चों के प्रति ममता का भाव उनमें दिखायी नहीं देता इन महिलाओं में अपने सहज भाव नहीं

6

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

हमेंड व कुमार कन्सर आ रहा है। यह बनावटीपन ऐसा है कि इसको न तो फेंका किया जा सकता है और न ही स्वीकारा जा सकता है।

विशेष
→ शहरी जीवन में रिश्तों व मातृ मूल्य भावों की बनावटीपन का वर्णन किया है।
→ शहरी जीवन में यह संत्रास व अकेलापन हर आदमी की नियति है, जो उसे भीड़ में अकेला बना देती है।
→ शहरों में बच्चों के प्रति माँ-बाप की कम होती जिम्मेदारियों की ओर इशारा है।
⇒ भाषा सहज व सरल है।
⇒ भाषा चित्रात्मक है, पाठक की स्मृति में मोलभाव वाली महिला की छवि बन जाती है।

प्रासंगिकता ⇒ वर्तमान जीवन में शहरी जीवन की उधेड़बुन ने रिश्तों को उपयोगितापूर्ण बना दिया है, मानवीय भावों व मूल्यों की गिरती स्थिति चिंतनीय है।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) मोहन राकेश चाहते थे कि 'आषाढ़ का एक दिन' के माध्यम से हिन्दी का एक मौलिक रंगमंच स्थापित करें। इस संबंध में उनकी दृष्टि स्पष्ट करते हुए बताएँ कि वे कहाँ तक सफल हो सके? 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मोहन राकेश का नाटक परंपरा में विशेष योगदान है। उनका स्पष्ट मत था कि रंगमंच पर सफलता ही नाटक की सफलता निर्धारित करती है। उनका मानना था कि रंगमंच के अनुसार नाटक होना चाहिए, यह प्रसाद के विपरीत दृष्टिकोण था।

उन्होंने 'आषाढ़ का एक दिन' की भूमिका में स्पष्ट किया कि हिन्दी नाटक को 'मौलिक रंगमंच' की जरूरत है। उन्होंने भारतीय परिस्थितियों के अनुरूप ~~नाटक~~ की रंगमंच की स्थापना की बात की। उनका मत था कि हिन्दी का रंगमंच पश्चिम की तरह पूँजी व तकनीक

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पर आधारित नहीं, बल्कि अभिनय मानवतत्व पर आधारित होगा। अपनी इस योजना में उन्होंने 'आषाढ़ का एक दिन' के जरिये अद्भुत सफलता प्राप्त की।

→ आषाढ़ का एक दिन 3 अंकों का छोटा नाटक है। इसमें उन्होंने केवल एक दृश्य की योजना रखी है। यदि एक पर्दा हो, दो दिये हों, एक चादर हो व बैठने के लिए स्टूल आदि हों तो नाटक आसानी से खेला जा सकता है।

→ इस नाटक में मोहन ने पर्याप्त रंग संकेत दिए हैं। निर्देशक का काम आसान कर दिया है, और मंचन रंग संकेत पढ़कर उनका पालन करता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

→ जटिल दृश्यों से बचने के लिए उन्होंने अद्भुत युक्ति निकाली। उज्जैन, कश्मीर एवं पर्वत आदि के सभी वर्णन बातचीत के जरिये ही दृश्यमान कर दिये हैं। कालिदास के उज्जैन जाने एवं वहाँ रहने का आभास महज बातचीत से ही महसूस हो जाता है।

→ नेपथ्य की ध्वनियों ने विशेष योगदान दिया है। घोड़े की टाप का वर्णन बेहद आकर्षक बन पड़ा है। बिजली का चमकना, धीरे धीरे प्रकाश का कम होना आदि युक्तियाँ आकर्षक हैं।

→ उनका पूरा जोर मानवीय पक्ष पर था। अभिनय को सटीक बनाने के

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

लिए समर्थ भाषा की योजना राकेश ने रखी। भाषा का प्रवाह, ~~संवाद~~ व कलात्मकता ने अभिनेता का काम आसान कर दिया है।

कुल मिलाकर कहें तो, मौलिक रंगमंच की जो कल्पना ~~की~~ राकेश ने की उस पर उनका नाटक पूरी तरह सफल है, तभी तो देश विदेश में देशी व विदेशी कलाकार व निर्देशक द्वारा सफल मंचन हो चुके हैं।

ठीक

11/20

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ख) आंचलिक उपन्यासों में 'मैला आंचल' के सर्वश्रेष्ठ उपन्यास के रूप में समादृत होने में उसकी भाषा-शैली की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

रेणु कृत 'मैला आंचल' को सर्वश्रेष्ठ आंचलिक ~~उपन्~~ उपन्यास होने का दर्जा प्राप्त है। कई समीक्षकों का मत है कि इसकी आंचलिकता का सबसे प्रमुख कारण इसकी भाषा है। भाषा का सांगोपांग विश्लेषण करके ही इसकी पुष्टि की जा सकती है।

रेणु ने भाषा शैली को बिल्कुल लोकजीवन से जोड़ा है। ग्रामीण पिछड़े इलाकों में शब्द बिगड़कर ही पहुँचते हैं अतः मैला आँचल का प्रत्येक पात्र शब्दों को काँट छाँट करके प्रयोग करके ~~प्रय~~ प्रयोग करता नजर आता है। लायबरेली (लाइब्रेरी) रजिन्नर बाबू, गन्नी बाबा (गांधी),

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जमाहिरलाल (जवाहरलाल), पुलोगराम (प्रोग्राम) इसके उदाहरण हैं।

मैला आँचल की भाषा की आंचलिकता का प्रमुख कारण स्थानीय लोकभाषा की शब्दावली का प्रयोग करना है, उदाहरण के लिए-

" तहसीलदार की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन लगाती है तो सारा गाँव गमगम होने लगता है।"

मैला आँचल की भाषा के सर्वश्रेष्ठ होने का बड़ा कारण लोक पक्ष, लोकमाटी, लोक संस्कृति को धारण करना है। बिदापत नृत्य, जाट जट्टिन का खेल आदि सब का सजीव चित्रण हुआ है। एक लोक गीत है -

" नायकजी हो नायक जी खोले दो
किवड़िया हो नायक जी।"

मैला आँचल की भाषा संदेश

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

है। वह ~~संगीत~~ वाद्ययंत्रों से संगीत की भी अभिव्यक्त करती है-

"धिन्ना! धिन्ना! धिनक धिनक धिन्ना।"

गद्दार व बेलौस होने के बावजूद रेणु के भाषायी लोकप्रियता के लिए डॉ. प्रशांत आदि शहरी बाबूओं की भाषा परिष्कृत रखी है-

"वेदांत ... भौतिकवाद ... "

इस प्रकार, भाषा द्वारा ग्रामीण संस्कृति, पूर्णिया की संपूर्ण लोकधर्मिता को उजागर कर देने के कारण ही 'मैला आँचल' नवीन उपन्यास बन पड़ा है। यद्यपि सर्वांगीणता के कारण और भी हैं, पर सर्वप्रमुख भाषा ही है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' उपन्यास यशपाल की स्थायी कीर्ति का आधार है। इसने संवेदना से लेकर शिल्प तक कई स्तर पर अपनी विशेष महत्वशीलता प्रकट की है।

'दिव्या' का महत्व निम्न स्तर पर देखा जा सकता है-

→ दिव्या का सबसे बड़ा महत्व है कि यशपाल ने आधुनिक समस्याओं को इतिहास में जाकर खोजा और सम्यक् दृष्टिकोण एवं भारतीय परंपरा (चार्वाक) से ही उसको समाधान की राह निकाली। यशपाल का नारी ~~पराधीनता~~ पराधीनता, ~~धर्म~~ वर्णव्यवस्था की बुराइयों, समाज की भोगवृत्ति का प्रमाणिक वर्णन प्रस्तुत किया है। यशपाल ने ब्राह्मण, बौद्ध धर्म की उन बुराइयों को ढूँढा है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

जिनकी प्राय अन्य साहित्यकार उपेक्षा कर देते हैं। उन्होंने महाकुलदेवी व 'बुद्धम् शरणम् गच्छामि' की परंपरा में नारी के प्रति अप्रगतिशील दृष्टिकोण को अभिव्यक्त किया है। और "मनुष्य योक्ता नहीं कर्त्ता है।" कहकर उन्होंने मनुष्य को उन सामाजिक विधानों का दूर करने को कहा है जो स्वतंत्र व्यक्तिगत चेतना में बाधक बनते हैं।

→ 'दिव्या' का महत्व इसलिए भी है कि 'दादा कॉमरेड', 'पार्टी कॉमरेड' की तरह यहाँ विचारधारा का यांत्रिक प्रयोग नहीं किया, बल्कि ऐतिहासिक वातावरण के साथ घुलाकर पेश किया है।

→ दिव्या का एक अन्य कारण से महत्व है, वह है - इसकी भाषायी प्रामाणिकता।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल ने ~~बुद्धकालीन~~ बुद्धकालीन भाषा की प्रामाणिकता का पूरा ध्यान रखा है और महाश्रेष्ठी, महाअतिहार जैसे शब्दों का सायास सटीक प्रयोग किया।

=> 'दिव्या' का महत्व इसलिए भी है कि इसने 'इतिहास' का प्रयोग आगे के जीवन की राह दिखाने के लिए किया है, उन्होंने साफ तौर पर इतिहास के प्रति अंधश्रद्धा व रोमानी भावबोधों से मना कर दिया।

इस प्रकार 'दिव्या' उपन्यास उपन्यास परंपरा में विशेष स्थान रखती है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation